ORIGINAL RESEARCH PAPER

Education

KEY WORDS: व्यक्तित्व विकास, शिक्षक, योग्यता एवं क्षमता

बच्चों के व्यक्तित्व विकास में शिक्षक की भूमिका

डॉ. संजय जिंदल M.Com.,M.Ed.,M.Phil.Ph.D.(Edu.).

ABSTRACT

बच्चे किसी भी देश के भविष्य होते हैं और इस भविष्य का निर्माण करने वाला अध्यापक होता है। बच्चों के व्यक्तित्व निर्माण में शिक्षकों की अहम भूमिका होती है। अंधकार से प्रकाश की ओर बढ़ने की प्रेरणा शिक्षक ही देता है। छात्रों को नैतिक, सामाजिक और आध्यात्मिक रूप से गढ़ने में उसका योगदान एक शिल्पकार की तरह होता है। एक अध्यापक ही बच्चों को अपनी ज्ञान रुपी गंगा में स्नान करा कर अच्छा नागरिक बनाने की दिशा में प्रयास करता है। शिक्षक ही बालकों की योग्यता, क्षमता, रूचि, अभिरूचि आदि के अनुसार शिक्षा प्रदान करता है। वह छात्रों को ज्ञान व क्रिया का अधिगम कराने के लिए उचित वातावरण की तैयारी करता है। ताकि छात्र भविष्य में सफलता प्राप्त कर सके।

प्रस्तावनाः

प्राचीन काल से आज तक शिक्षक को समाज के आदर्श व्यक्तित्व के रूप में स्वीकारा जाता है। प्रारम्भ में वह ब्रह्मा–विष्णु तो कालान्तर में धर्मगुरु बन गया। यह तो निश्चित ही है कि बालक के व्यक्तित्व निर्माण में शिक्षक की अद्वितीय भूमिका है। मनोविज्ञान के प्रभाव ने शिक्षा को बाल केन्द्रित बना दिया है। ऐसे में आधुनिक शिक्षा पद्धति में शिक्षक, शिक्षक होने के साथ–साथ अभिभावक, नेता, निर्देशक, सहयोगी, सलाहकार तथा निष्पक्ष निर्णायक आदि अनेक भूमिकाओं का निर्वाह करता है। आज शिक्षक अनेक प्रकार से बालकों का सहयोग करता है। भौतिक युग की कृत्रिमता, यांत्रिकता ने भारतीय परिवेश को परिवर्तित एवं परिवर्तनशील बना दिया है। समय के साथ–साथ नए–नए प्रयोगों और दृष्टिकोणों ने हर व्यवसाय एवं पद के स्वरुप को बदल दिया है। अब कोई भी कार्य अपने प्राचीन तौर–तरीकों से करना असंभव सा हो गया है। जब ऐसा परिवर्तन समाज में आता है, तब समाज के शिक्षित, सुशिक्षित वर्ग का दायित्व और भी बढ़ जाता है। दायित्वों का भार उसे अधिक संयमित होकर निभाना पड़ता है। यह बात शिक्षक वर्ग पर अधिक लागू होती है। समाज का निर्माता, राष्ट्र का मार्गदर्शक, स्वस्थ परंपराओं के नियामक शिक्षक को और भी अधिक सावधान होने की जरूरत पड़ती है।

शिक्षक का कर्तव्य छात्रों को केवल शिक्षित करना ही नहीं है, अपितु उन्हें संस्कारी भी बनाना है। उनके अंदर केवल शब्द ज्ञान ही नहीं भरना है बल्कि उसे नैतिकता, कर्तव्य परायणता, सजगता का पाठ पढ़ाना अत्यंत आवश्यक हो गया है। यदि अध्यापक यह कार्य नहीं करता तो वह सच्चे अर्थों में अध्यापक कहलाने योग्य ही नहीं है। अध्यापक का कार्य केवल पाठ पढ़ाना ही नहीं होता है, अपितु पाठ को पढ़कर या पढ़ाकर उसमें आयी उद्देश्यात्मकता, नैतिकता आदि को समझाना–सिखाना भी उसी का कर्तव्य होता है। पाठ को पढ़कर समझने की सार्थकता तभी है जब उस ज्ञान को व्यवहार में भी लेकर आया जाए।

बच्चे अपने प्रथम गुरु अर्थात् अभिभावकों से ही सच बोलना सीखते हैं। जब वे छोटी–छोटी बात पर माता–पिता को झूठ बोलते देखते हैं तो स्वतः ही वे झूठ बोलने लग जाते हैं। गांधी जी ने सत्य के प्रयोग पुस्तक में सही बताया है कि जो कार्य हम स्वयं करते हैं, उस कार्य को बच्चों को करने से मना कैसे कर सकते हैं। क्या बच्चों पर उसका प्रभाव नहीं पड़ेगा ? गाँधी जी शिक्षक के चरित्र और उसके द्वारा शिक्षार्थियों के चरित्र निर्माण पर विशेष बल देते थे। गाँधी जी का मानना था कि आत्मा की कसरत शिक्षक के आचरण द्वारा ही प्राप्त की जा सकती है। अतएव युवक हाजिर हों चाहे न हों, शिक्षक को सावधान रहना चाहिए। लंका में बैठा हुआ शिक्षक भी अपने आचरण द्वारा अपने शिष्यों की आत्मा को हिला सकता है। यदि शिक्षक स्वयं झूठ बोले और और अपने शिष्यों को सच्चा बनाने का प्रयत्न करे, तो वह व्यर्थ ही होगा। डरपोक शिक्षक शिष्यों को वीरता नहीं सिखा सकता। व्याभिचारी शिक्षक शिष्यों को सयंम किस प्रकार सिखाएगा ? शिक्षक को स्वयं के लिए नहीं बल्कि अपने शिष्यों के लिए अच्छा बनना और रहना चाहिए। हमारे वैदिक कालीन शिक्षक आचरण कि पवित्रता को लेकर अत्यंत सजग थे। वे पवित्र शब्दों के वास्तविक संरक्षणकर्ता, सामाजिक नीतिशास्त्र एवं धर्मशास्त्र के व्याख्याता और ऐसे उत्सर्ग करने वाले अध्यापक थे जो छात्रों की आंतरिक क्षमताओं को सुदृढ़ कर देते थे। आज भी वैदिक अध्यापकों की तरह ऐसे क्षमतावान अध्यापक पैदा किये जा सकते हैं जो कक्षा में पूरी तैयारी के साथ जाते हों, संप्रत्ययों का सही स्पष्टीकरण अच्छी व्याख्या के साथ करते हों और उन्हें हम प्रभावशाली शिक्षक के रूप में जानें।

शिक्षक का कर्तव्य बन जाता है कि अपने बच्चों को केवल पुस्तकीय ज्ञान तक ही सीमित न रखे। पुस्तकीय ज्ञान तो मात्र परीक्षा उत्तीर्ण करने का साधन होता है। अंकों को पाने का एक उपक्रम होता है। लेकिन विभिन्न चीजों से जोड़कर हम उनके व्यक्तित्व का सर्वांगीण विकास कर सकते हैं। उन्हें अच्छा नागरिक और समाज दर्शक बनाकर समाज की छोटी से छोटी चीज से जोड़ा जाय और उन्हें हर उस बात, घटना, विचार, भावना को समझाएं जिससे उन्हें अपने परिवेश, समाज से जुड़ने और समझने में मदद मिले। शैक्षिक एवं प्रबंधकीय कार्यों में आज दायित्व बोध का आभाव है। नयी शिक्षा नीति विद्यालयों एवं महाविद्यालयों को शैक्षिक संस्थाओं में अधिक से अधिक स्वायत्तता देने की वकालत करती है और पूरी शिक्षण प्रक्रिया में दायित्वबोध की बात करती है। यदि हम अच्छे अध्यापक पा सकते हैं तो निश्चित ही उनमे दायित्वबोध की भावना होगी और राष्ट्र के भविष्य की शिक्षा कभी भी धूमिल नहीं होगी। आज शिक्षकों के दायित्वों की चर्चा इसलिए बनी हुई है कि इसने विश्वविद्यालयों की स्वायत्तता का अर्थ अनियंत्रित स्वतंत्रता लगाया है, जबकि स्वायत्तता से तात्पर्य नियंत्रित स्वतंत्रता होनी चाहिए। अध्यापकों को शिक्षण विधि एवं पाठ्य पुस्तकों के चयन एवं विचारों के अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता तो मिलनी ही चाहिए जिससे वे उन्मुक्त और स्वतंत्र वातावरण में शिक्षण एवं शोध कार्यों को प्रोत्साहन दे सकें। इसके साथ ही शिक्षकों के कार्यों का मूल्यांकन भी समय–समय पर विश्वविद्यालयी अधिकारियों, समाज तथा शिक्षार्थियों द्वारा किया जाना चाहिए। इससे शिक्षक के अपने व्यवसाय के प्रति मूल्यांकन द्वारा दायित्व की भावना का पता लगेगा।

देश के सर्वांगीण एवं बहुमुखी विकास के लिए शिक्षा की परम आवश्यकता है और अच्छी शिक्षा के लिए योग्य शिक्षकों की, योग्य शिक्षकों के लिए उच्चकोटि की शिक्षा व्यवस्था की जरूरत है जो किसी उत्तम कोटि के शिक्षा संस्थान में ही सम्भव है। उत्तम कोटि के अध्यापक के द्वारा ही देश की भावी पीढ़ी (बालक) के व्यक्तित्व का सर्वांगीण विकास किया जा सकता है। सभी शिक्षक जन्मजात कुशल नहीं होते, अतः शिक्षण कला में दक्षता एवं पूर्णता हेतु आवश्यक है। आधुनिक शिक्षा पद्धति में शिक्षक मानवतावादी बालक जब सीखना चाहे, जैसे सीखना चाहे, यह उसका अधिकार है। अतः यह अवसर उसे मिलना चाहिए। इसलिए आज औपचारिक शिक्षा के स्थान पर खुली शिक्षा के रूप को भी समर्थन मिला है। अतः आज के शिक्षक सब कालों के शिक्षकों से भिन्न दिखाई देते है। वे विद्यार्थी से दूर रहकर भी शिक्षा देने लगे हैं। एक अच्छे अध्यापक का व्यवहार आज के संदर्भ में मित्रवत् होना चाहिए। मित्रवत् व्यवहार होने पर छात्र अपनी व्यक्तिगत समस्याओं को खुलकर प्रकट कर सकते हैं। अध्यापकों से भय का भाव उन्हें अपने से दूर करता चला जाता है। वे कद और भार में तो शारीरिक रूप से बढ़ते रहते हैं। लेकिन मानसिक रूप से उनका विकास नहीं होता हैं। इससे शिक्षक द्वारा

दिया गया ज्ञान व्यर्थ ही जाता है। प्रायः शिक्षक भी डाँट–फटकार कर समझाने का प्रयास करता है। जिससे डर के कारण बच्चों का विद्यालय जाने का मन नहीं करता है। वे विद्यालय जाने से कतराने लगते हैं। घर से विद्यालय जाने की बजाय कहीं और ही घूमने–फिरने तथा समय काटने पहुँचते हैं। ऐसे हालात में बच्चों का मन कैसे पढ़ाई में लगेगा। पढ़ाई बोझ लगने लगेगी, विद्यालय से दूरी बढ़ने लगेगी। दूरी का भाव खिन्नता, कुंठा और तनाव को फैलाता है। बच्चे उग्रता में आकर अमानवीय व्यवहार करने लग जाते हैं। यही कारण है कि आज हम समाज में विद्यार्थियों द्वारा अपने ही साथियों को मारने, लूटने से लेकर जघन्य कार्यों में लीन देखते हैं। वे अपने साथियों से ही अमानवीय व्यवहार करते हुए संकोच नहीं करते हैं। यौन शोषण, हिंसा का वातावरण फैलाने लगते हैं। शिक्षक का मित्रवत् व्यवहार छात्रों के मन में आई भटकाव को दूर करता है, उन्हें भ्रमित होने से बचाता है। जीवन संजीवनी का कार्य करने वाले अध्यापकों का प्रभाव निश्चित रूप से गुमराह छात्रों की दशा और दिशा बदलने में कारगर सिद्ध होता है। शिक्षण व्यवसाय निःसंदेह एक आदर्श व्यवसाय है। इसलिए शिक्षक के उत्तरदायित्व, उसकी भूमिकाएं तथा उसके कार्य अधिक जिम्मेदारीपूर्ण हैं। आधुनिक शिक्षा पद्धति में शिक्षक के स्वरूप की संकल्पना करें तो लगता है शिक्षक वर्तमान प्रचलित शिक्षण पद्धतियों तथा कार्य प्रणाली के साथ परिवर्तित परिस्थितियों के अनुरूप अपने को बना रहा है। वह शिक्षक होने के नाते एक अच्छा मार्गदर्शक बनता है। वह शिक्षण में नई एवं सामयिक विधियों, नव प्रौद्योगिकी तथा यांत्रिकी उपकरणों का प्रयोग करता है। वह प्रवेश प्रक्रिया, शिक्षा, मूल्यांकन तथा अभ्यास आदि में नव तकनीकों का प्रयोग भी करता है। शिक्षक बालकों का मित्र तथा सहयोगी होने के कारण मार्गदर्शक के रूप में भूमिका अदा करता है। साथ ही विद्यार्थियों में मूल्यों का विकास तथा राष्ट्रीय एकता के विकास में भी भूमिका निभाता है। अतः प्राचीन समय की तुलना में आधुनिक शिक्षा पद्धति में शिक्षक बालकों के अधिक नजदीक है। महान शिक्षक एवं भारत के भूतपूर्व राष्ट्रपति डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन शिक्षकों को सलाह देते थे कि–'हमें सतत् बौद्धिक निष्ठा एवं सार्वभौम करुणा की खोज में रहना चाहिए। ये दोनों गुण सच्चे शिक्षक की पहचान हैं।

निश्कर्श :

एक शिक्षक में अपने पेशे के प्रति प्रतिबद्धता होनी चाहिए। शिक्षक को जीवन भर अध्ययन करते रहना चाहिए। उसे शिक्षण और बच्चों से प्रेम होना चाहिए। उसे न सिर्फ विषय की सैद्धान्तिक बातें पढ़नी चाहिए बल्कि छात्रों में हमारी महान सभ्यता की विरासत और सामाजिक मूल्यों की जमीन भी तैयार करनी चाहिए। आधुनिक प्रौद्योगिकी की सहायता से शिक्षक छात्रों का ऐसा विकास करे कि वे बिना किसी शिक्षक की सहायता लिए स्वयं सीखने में सक्षम हो सकें। ज्ञान प्राप्ति के लिए चिंतन एवं कल्पना की स्वतंत्रता आवश्यक है और इसके लिए शिक्षक को उपयुक्त माहौल का निर्माण करना चाहिए। शिक्षक रोल माडल होता है। वह न सिर्फ हमें ज्ञान देता है बल्कि हमारे जीवन को संवारते समय महान सपने और उद्देश्य प्रदान करता है। दूसरी बात यह कि शिक्षा एवं ज्ञानार्जन की पूरी प्रक्रिया का परिणाम यह होना चाहिए कि व्यक्ति में पेशेवर क्षमता का विकास हो और उसमें इस आत्मविश्वास और इच्छाशक्ति का उदय हो कि दृढ़तापूर्वक सारी बाधाओं को पार कर एक रूप रेखा का विकास कर सके और इस कार्य में शिक्षक सहायता करता है। एक शिक्षक का जीवन कई दीपों को प्रज्ज्वलित करता है। आशावादी और मूल्याधारित शिक्षण में विश्वास करने वाले प्राथमिक, माध्यमिक और कॉलेज शिक्षा के शिक्षक शिक्षार्थियों को कई दशक आगे के लिए तैयार कर देते हैं। इस प्रकार शिक्षक विद्यार्थियों को भविष्य के लिए तैयार करता है। शिक्षण का उद्देश्य छात्रों में राष्ट्र निर्माण की क्षमताएं पैदा करना है। ये क्षमताएं शिक्षण संस्थाओं के ध्येय से प्राप्त होती हैं तथा शिक्षकों के अनुभव से सुदृढ़ होती हैं ताकि शिक्षण संस्थाओं से निकलने के बाद छात्रों में नेतृत्वकारी विशिष्टता आ जाए। अगर समाज में योग्य, चरित्रवान एवं निष्ठावान छात्र हो जाएं तो वर्तमान समाज को प्रत्येक वर्ष एक सुखद अहसास दिया जा सकता है और यह कार्य शिक्षक, जो गुरु हैं, प्रेरणास्रोत हैं, वही कर सकते हैं। अंततः शिक्षा का उद्देश्य है सत्य की खोज। इस खोज का केन्द्र अध्यापक होता है जो अपने विद्यार्थियों को शिक्षा के माध्यम से जीवन में व्यवहार में सच्चाई की शिक्षा देता है। छात्रों को जो भी कठिनाई होती है ,जो भी जिज्ञासा होती है, जो वे जानना चाहते हैं, उन सब के लिए वे अध्यापक पर ही निर्भर करते हैं। उनके लिए उनका अध्यापक एक तरह से ज्ञान का भंडार (एन्साइक्लोपीडिया) है जिसके पास सभी प्रश्नों के उत्तर हैं। यदि शिक्षक के मार्गदर्शन में प्रत्येक व्यक्ति शिक्षा को उसके वास्तविक अर्थ में ग्रहण कर मानवीय गतिविधियों के प्रत्येक क्षेत्र में उसका प्रसार करता है तो मौजूदा 21वीं सदी में दुनिया काफी सुन्दर हो जाएगी।

संदर्भ सूची :

1. गाँधी,एम. के., सत्य के प्रयोग, नवजीवन प्रकाशन मंदिर, अहमदाबाद, 1909, पृ. 310.
2. भार्मा, एस.के., ट्रेंड्स ऐंड थॉट्स इन एजुकेशन, शोध प्रपत्र, शिक्षाशास्त्र विभाग, राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर, वॉल्यूम 7, 2005, पृ. 13–17.
4. अथर्ववेद, 11/3/5.
5. कठोपनिषद्, शान्तिपाठ.
6. तैत्तिरीयोपनिषद्, 1/1.
7. तैत्तिरीयोपनिषद्, 1/2/3.